2015

निर्मल ज्योति

निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इण्टर कालेज, झाँसी

प्यारे अभिभावकों व बच्चों,

''ओ मेरे मांझी, ले चल मुझे'' इस विषय पर आधारित था हमारी कक्षा १२ की छात्राओं का विदाई समारोह। हर युग, सत्र, वर्ष एवं दिन अपने अवसान पर अनेक यादें व अनुभव छोड़ जाता है जबकि नये युग, सत्र, वर्ष व दिन का आरम्भ नवीन हौसलें के साथ किया जाता है। क्षण-क्षण में विकसित होने वाले इस प्रतियोगी संसार में आज हम मात्र अपनी योग्यता, मेहनत, शक्ति व लगन से सफलता हासिल नहीं कर सकते। हमें जरुरत है उस मांझी ईश्वर की जो हमारी जीवन नैय्या को पार लगाने में सक्षम है।

सन् 2015 ने हमें नई दिशा, नई उषा व नवीन आसमान दिया है सर्वत्र व्याप्त इस नवीनता का हम नवीन स्वरूप के साथ स्वागत करें। आजकल हमें घर वापसी कहकर दूसरे धर्म की ओर उन्मुख किया जा रहा है मैं यह पूछना चाहती हूँ कि क्या हम सन् 2015 की नवीनता को इन तुच्छ धार्मिक विवादों में जूझकर निरर्थक करना चाहेंगे या स्वतंत्र हृदयों से अपने मन में विद्यमान ईश्वर की आराधना करके जो हमारे जीवन की शक्ति भक्ति व मुक्ति का आधार है, सार्थक जीवन बिताना चाहेंगे।

हमारे देश को क्या होता जा रहा है। पाश्चात्य देशों की आधुनिकता की नकल करते करते हम अपनी प्राचीन धरोहर, सभ्यता व संस्कारों से दूर होते जा रहे है। हमारी आज की युवा पीढ़ी मीडिया, इण्टरनेट तथा मोबाइल में इतनी समाहित हो गई है कि रिश्ते नाते व सच्चे प्रेम की कद्र करना मानो भूल चुकी है। हमारे बढ़ते बच्चों की उदासीनता से न सिर्फ विद्यालय वरन् अभिभावकगण भी त्रस्त हैं। अनेक संस्थाएं बच्चों को गुरु गरिमा से वंचित कर उन्हें संस्कार हीन बना रही हैं।

प्रिय बच्चों, आप पथ भ्रष्ट न होकर आज 'विद्यालय वापसी' का प्रण लें। ताकि विद्यालय आपको सर्वगुण सम्पन्न बना सके। बाइबिल में लिखा है ''अपने पिता ईश्वर को अपने सारे मन, सारी शक्ति, सारी बुद्धि व सारी आत्मा से प्यार करो और अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करो।'' यदि आपका जीवन इस कसौटी पर खरा उतर गया, तो आपके जीवन को सफल होने तथा महानता के सोपानों पर चढ़ने से कोई भी सांसारिक ताकत वंचित नहीं कर सकेगी। तो आईये हम **घर वापसी** करें अपने सृष्टिकर्ता ईश्वर के लिए, **विद्यालय वापसी** करें अपने जीवन को उसके अनुरूप ढालने के लिए तथा **संस्कार वापसी** करें, अपने जीवन को फलीभूत व सार्थक बनाने के लिए महानता के सोपानों पर चलना आरम्भ तो करें; मंजिल स्वयं आपका ईश्वर आपको देगा। वे सोपान हैं मन में विश्वास, आंखों में स्वाभिमान, हाथों में मेहनत, पैरों में सही दिशा व दिल में कमजोरों के लिए प्यार।

सिस्टर पूनम सी.जे., प्रधानाचार्या

www.nirmalaconventjhansi.org

ncintercollege@gmail.com

यह सुनने में मुझे बहुत हर्ष हो रहा है कि आपका विद्यालय परिवार अपने लेखन व कविता संयोजन को विद्यालय-पत्रिका के रूप में नवीन संस्करणो द्वारा प्रस्तुत कर रहा है। इस कार्य के लिए मैं ,आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ। पठन-पाठन के दौरान छात्राओं का विद्यालय में शारारिक,मानसिक और बौद्धिक विकास होता है। बढ़ती प्रतिस्पर्धाओं के कारण छात्राओं पर उनके माता-पिता, विद्यालय, समुदाय एवं समाज का दबाव सतत् बना रहता हैं। इन सबके बावजूद भी उसे सुंदरता से स्वीकार करना और उसका सामना करके उसे जीतना एक अतुलनीय कार्य है। शिक्षा आपको ऐसी ही बहुत सी समस्याओं से जूझने की दृढ़ता प्रदान करे,

प्रभु का आशीर्वाद और मेरी शुभकामनाएं,

विशप पीटर पारापुल्लिल

दिनांक 27.12.2014 को सभी का हृदय जहां उदास था वहीं प्रसन्न भी था क्योंकि हमारे विद्यालय की प्रबन्धिका सि. दीपा को उनके लक्ष्य पूर्ण करने हेतु मनीला (फिलीपीन्स) जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसे ईश्वर की योजना जानकर उन्हें बधाई दी गयी। आपने अपने कार्य व आचरण द्वारा हमें प्यार और अनुशासन का पाठ पढ़ाया।

सि. दीपा की यह बात हमारे हृदयों को छू गयी कि ' मैं सुबह व दोपहर के समय शिक्षक शिक्षिकाओं के अभिवादन का बेसब्री से इंतजार करती थी।'

इन्होंने

"I see the moon, moon see me."

इस गाने द्वारा अपने मर्मस्पर्शी भावों को अभिव्यक्त किया। विद्यालय परिवार ने उन्हें बरगद के पवित्र और विशाल वृक्ष की उपमा देकर एक समृति चिन्ह भेंट किया और ढेर सारी शुभकामनाएँ दी।

अंजलीना रॉडरिक्स

सि. मेरी सी.जे. का स्वागत विद्यालय की नई प्रबन्धिका के रुप में किया गया। सि. मेरी ने ईश्वर की शक्ति पर विश्वास कर इस जटिल कार्य को विनम्रता भाव से स्वीकारा।

सम्पादकीय

प्रिय पाठक गण,

अपनी वार्षिक पत्रिका निर्मल ज्योति का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुये हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। सन् 2005 में हमारी पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। इस वर्ष सन् 2015 में पत्रिका के 10 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। एक दशक की इस छोटी सी विकास यात्रा में हमारी पत्रिका में अनेक परिवर्तन आये। इसके पृष्ठ श्वेत श्याम से इन्द्रधनुषी हो चुके हैं। पत्रिका का रंग रूप, कलेवर सब कुछ बदला सा है।

यात्रा कभी थमती नहीं। हम भविष्य में भी परिवर्तन लाते रहेंगे। सन् 2015 में हमारे विद्यालय को स्थापित हुये भी 70 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इन 7 दशकों में हमने अपनी शत-प्रतिशत क्षमता, छात्राओं की शिक्षा दीक्षा व उनके नैतिक और चारित्रिक विकास में लगाई है। इसी का परिणाम है कि आज हमारा अभिभावकों के साथ एक विश्वास का रिश्ता कायम हो चुका है। हमारा निरन्तर प्रयास है कि हम इस विश्वास को टूटने न दें। हम अपने प्रयासों व आपके सहयोग से एक सुन्दर समाज के सृजन में सहायक बन सकते हैं। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी हमें आपका सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित

श्रीमती सुनीता श्रीवास्तव, सम्पादक

सम्पादक मण्डल

श्रीमती सुनीता श्रीवास्तव
मुख्य सम्पादक

श्रुति सिंह गौर
11 ए

अनुशा भाटिया
12 ए

सैफी आलम
11 सी

NATIONAL INSTITUTE OF OPEN SCHOOLING (NIOS)

ऑनलाइन भुगतान
शीघ्र, सुरक्षित आसान

रविवार, अवकाशों में सम्पर्क कक्षाएँ

विश्व का सबसे बड़ा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान

माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम (पूरे वर्ष)

पहचान पत्र अध्ययन सामग्री का प्रेषण सीधे शिक्षार्थियों को

हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू और चुनिंदा विषय

ब्लाक	प्रवेश तिथि	परीक्षा समय
प्रथम ब्लॉक	1 मार्च 2015 से 31 अगस्त 2015	अप्रैल/मई 2016
द्वितीय ब्लॉक	1 सितम्बर 2015 से 28 फरवरी 2015	अक्टूबर/नवम्बर 2016

स्कूल वेबवाइट की लॉचिंग

www.nirmalaconventjhansi.org

जी हाँ ये है हमारे विद्यालय की नई वेबसाइट जो 01 जुलाई 2014 को लॉन्च हुई जिस पर क्लिक करते ही हमारे स्कूल की समस्त जानकारी उपलब्ध हो जाती है। प्रबन्धिका **सि. दीपा** ने समस्त स्टाफ की उपस्थिति में विद्यालय की वेबसाइट लांच की।

शैक्षिक अटूट प्रयास

हिन्दी विभाग

हिन्दी अत्यन्त मधुर एवं समृद्ध भाषा है किन्तु आजकल बोलचाल में जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाता है उसमें अनेकों अशुद्धियां हैं। भाषा का परिमार्जन हमारे हिन्दी विभाग का प्रथम उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हमने वर्ष भर निम्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

1. वाद विवाद प्रतियोगिता / विषय क्या लड़कियां लड़कों से बेहतर है।
2. निबन्ध प्रतियोगिता / विषय छात्राओं की शिक्षा में अभिभावकों का योगदान।
3. कविता एवं कहानी लेखन / विषय सच्चाई एवं ईमानदारी, मित्रता, प्रात:काल का समय, जीवन संघर्ष, पछतावा आदि
4. सुलेख एवं इमला / प्राथमिक कक्षाओं के लिये।

सुनीता श्रीवास्तव, हिन्दी विभाग

सामाजिक विभाग

हमारा विभाग निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। क्लब के सदस्यों के बीच विषय से सम्बन्धित वार्तायें होती हैं। छात्राओं के विषय को मैप, नेट, समाचार पत्र इत्यादि के माध्यम से रूचि पूर्ण बनाया जाता है।

1. 12ए की छात्राओं के लिये क्विज (नागरिक व समाज शास्त्र)
2. 11ए की छात्राओं के लिये क्विज (नागरिक व समाज शास्त्र)
3. 9, 10 की छात्राओं के लिये क्विज (इतिहास, भूगोल, एवं अर्थशास्त्र)
4. 7, 8 की छात्राओं के लिये क्विज (सामान्य ज्ञान, इतिहास, भूगोल)

प्रमिला बाजपेयी, समाजिक विभाग

कम्प्यूटर विभाग

'कम्प्यूटर का है युग यहीं, कम्प्यूटर का विस्तार है, कम्प्यूटर से ही हो रहा, नर नारी का कल्याण है।'
हमारा विद्यालय क्यों इससे अछूता रह सकता है।
हमारे विद्यालय में भी जूनियर व सीनियर छात्राओं के लिए अलग-अलग सुव्यवस्थित Computer Labs की व्यवस्था की गई हैं, यहाँ पर छात्राओं को पूर्ण रूप से कम्प्यूटर विषय का ज्ञान कराया जाता है।

श्रीमती अलका बेकन, कम्प्यूटर विभाग

अंग्रेजी विभाग

English is a universal language it links the whole world together. That's why in NCGIC we focus on English very much. Sisters as well as teachers try their best to develop reading, writing, speaking, under standing listening and grammatical skills of students.

1. Quiz Competition 6-8, 9-12
2. Poem Recitation & skits.
3. Special Classes on grammar

Reena Chakravarti, English Club

विज्ञान विभाग

विद्यालय की छात्राओं में वैज्ञानिक सोच विकसित हो और उनका सर्वांगीण विकास हो, इस लक्ष्य को पूरा करने के लिये विज्ञान क्लब ने विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। छात्राओं को प्रयोगात्मक कार्यों द्वारा शैक्षिक जानकारी से अवगत करवाया गया।

1. प्रयोगशालाओं में बारम्बार बच्चों को ले जाया गया
2. मॉडल एवं प्रोजेक्ट बनवाकर
3. क्विज प्रतियोगिता
4. विज्ञान सम्बन्धी नवीन खोजों से अवगत कराकर।

शशि निगम, विज्ञान विभाग

गणित विभाग

गणित यानि जोड़ घटाना बाल्यावस्था में बच्चों की 'चॉकलेट' की गिनती से शुरू होकर अंतरिक्ष में भेजे जाने वाले उपग्रह की उल्टी गिनती पर खत्म होता है और शायद इससे भी आगे प्राईमरी कक्षाओं में बच्चों में जिज्ञासु प्रवृत्ति जाग्रत करके उन्हें जोड़ घटाने का ज्ञान, गिनती व पहाड़ों पर विशेष ध्यान, जूनियर कक्षाओं में नियमित रूप से कक्षा परीक्षाएं, लिखित व मौखिक प्रतियोगिताएं, हायर सैक्शन में विभिन्न लेखकों की पुस्तकों से शीट तैयार कर गणित की हर समस्या का समाधान, स्क्रीन व प्रोजेक्टर के माध्यम से रूचिपूर्ण अध्यापन किया जाता है।

प्रतिवर्ष झांसी टॉप फाइव में स्थान

अलका यादव	2013-14	इण्टरमीडिएट	99/100
आशी जैन	2013-14	हाईस्कूल	99/100

राकेश कुमार दुबे, गणित विभाग

अपील

समस्त अभिभावकों से अपील है कि आप हमारे इस अभियान में अपना सहयोग प्रदान करें। छात्राओं पर घर में पूरा ध्यान दें जिससे उनका स्वर्णिम भविष्य बनाने में हम सफल हो सकें।

सि. पूनम, प्रधानाचार्या

Head Girl Speaks

To be chosen as the Head Girl of the prestigious institution like Nirmala Convent Girl's Inter College is a great honour for me. I feel blessed and fortunate that our principal reverend Sr. Poonam, great and worthy teachers and the college management has considered me capable enough to shoulder this responsibility. I still remember the first day of this college. New atmosphere, new teachers and new friends. Everything was new as the spring. I am extremely grateful to my honorable teachers who taught me many valuable lessons of life. Our principal Sr. Poonam, her devotion to school and affection to her students is unmatched. We will never forget her motherly love. Between the boundaries of this school, we have our own little world. The world which is full of sweet friends., wonderful guides and a kind hearted patron mother Mary. It is impossible to let any single moment forget like that.

Giving speech in the honorable presence of D.M. and D.I.O.S. Sir, anchoring in the annual function, participating in college competitions are some moments which will be safe in my memorabilia forever and ever. Nirmala Convent Girls Inter College not only imparts education to the students but also allows them to bloom. This it is my college and no college can match it.

To the achievement of the college, our college epitomizes the principles of four 'E'.

Endeavor : Whatever is worth doing at all is worth doing well.
Endurance : Victory belongs to the most persevering.
Encounter : Who knows nothing base fears nothing.
Enterprises : The word impossible is not in our Dictionary. Because Impossible says " I am possible".

Thank you Nirmala Convent for giving me memories as bright as the sun and as soothing as the moon.

Shreya Chaurasia, **Head Girl**

Thanks to my principal and teachers whose motivation and also the hard work of "Greens" brought us sweet memories of unexpected success throughout the year.
My message to the group is Everything is possible with trust in God, determination and continuous hard work.

Rohini Jatav, Green House Capital

I Promila Peter, the Captain of Red House of N.C.G.I.C. would like to say that I have a unique collection of sweet memories of the sisters, teachers and the students. Thank you for making me what I am. My hearty thanks to all my "reds" for their support and co-operation.
My message for you friends -
Hold fast to dreams, for if dreams dry,
Life is a broken- winged bird that cannot fly.

Promila Peter
Red House Captain

I am proud that I am student of N.C.G.I.C for many reasons, one of the main ones is our devoted teachers and principal Sr. Poonam who not only make learning, fun and exciting but also help to organize special things for us like quiz, games, different type of competitions etc.
I really love this college and what it stands for. When I wear my school uniform, I wear it with pride because I treat this college with dignity, respect and pride.

Soniya Verma
Green House

I Aditi Dwivedi the yellow house captain feel proud to be a part of this incompatible institution. Healthy and studious atmosphere, lovely surrounding efficient & motivating teachers and moral lessons that keep the students spell brand.
My message to my house is " Never fail to appreciate, admire and be grateful to this school.'

Aditi Dwivedi
Yellow house Captain

आज मैं आजाद हूँ दुनिया के चमन में (15 अगस्त)

यह सच ही है कि आज भारत संसार के सम्मुख एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में खड़ा है तथा यह दुनिया का सबसे प्रमुख प्रजातांत्रिक देश है। 15 अगस्त की सुबह, कितनी सुहानी सुबह है। देशभक्ति गीतों की मधुर ध्वनि आते जाते कानो में पड़ती है और मन भावों में डूब डूब जाता है। छोटे छोटे बच्चे हाथों में तिरंगे लिये विद्यालय की ओर बढ़ रहे हैं। मार्ग में जगह जगह तोरण लगे हैं स्वागत द्वार बनाये गये है। श्वेत पंक्तियों से मुख्य द्वार सजाये गये हैं।

हमारे विद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में माननीय जिला विद्यालय निरीक्षक श्री आई.पी.एस. सोलंकी जी प्रात: 9:45 पर कॉलेज प्रांगण में पधारे। फा. जोसफ कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि थे। श्री सोलंकी जी ने अपने कर कमलों से ध्वजारोहण किया एवं कई वृक्ष रोपकर पर्यावरण सुरक्षा का संकल्प याद दिलाया। चारों दलों की समस्त छात्राओं ने मार्चपास्ट का प्रदर्शन किया तथा मुख्य अतिथि ने सलामी ली। छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अनीता मैसी ने किया। कार्यक्रम के अन्त में श्री सोलंकी जी ने अपने अभिभाषण में कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। विद्यालय की कार्यप्रणाली, अनुशासन, परीक्षा परिणाम के उत्कृष्ट प्रदर्शन आदि की भी सराहना की। जब उन्होंने कहा कि छात्राओं द्वारा प्रदर्शित मार्च पास्ट सर्वश्रेष्ठ था तो बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। छात्राओं की सफलता का श्रेय प्रधानाचार्या जी एवं अध्यापक अध्यापिकाओं को देते हुये उन्होंने विद्यालय स्टाफ की प्रशंसा की। छात्राओं का उत्साह वर्धन करते हुये उन्हें भविष्य में उच्च पदों पर आसीन होने की शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय की प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम सी.जे. ने मुख्य अतिथि का आभार प्रकट किया।

मनवा लागे रे

सिस्टर पूनम की फीस्ट पर विशेष...

जी हाँ, ये मन को छूने वाले शब्द है हमारी प्यारी प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम जी के जो पूर्ण रूप से विद्यालय की प्रगति के लिए प्रयत्नशील एवं समर्पित है।

दिनांक 21 जनवरी का ये दिन सिस्टर पूनम के जीवन का महत्वपूर्ण दिन (फीस्ट डे) है। कई वर्षों पूर्व सिस्टर ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता की सेवा के लिए प्रभु येसु को समर्पित कर दिया था। सिस्टर की फीस्ट को समस्त स्टाफ व छात्राओं द्वारा बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। छात्राओं ने विशेष प्रार्थना निवेदनों के साथ उनकी सलामती और खुशियों की दुआएँ मांगी। शिक्षिकाओं ने शुभकामनाओं को शायरियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। 'सूरज से जलते रहना' गीत द्वारा सिस्टर के विशिष्ट गुणों को प्रदर्शित किया गया। ' मनवा लागे रे ' गाने पर छात्राओं ने मधुर नृत्य प्रस्तुत कर सिस्टर का दिल जीत लिया। कार्यक्रम के अंत में सिस्टर पूनम ने संत ऐग्नस के जीवन पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को अपने जीवन को निर्मल व पवित्र बनाए रखने की शिक्षा दी और अपने हृदय के भावों को 'मनवा लागे रे निर्मला कान्वेंट में मनवा लागे रे' कहकर अभिव्यक्त किया।

श्रीमती अनीता सिंह, सहायक अध्यापिका

निर्मला कॉन्वेन्ट की महान उपलब्धि

10 सितम्बर 2014 को शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में डॉ. के.एल. गर्ग अवार्ड 2014 निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इण्टर कालेज झाँसी की प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम सी.जे. को झांसी जनपद की श्रेष्ठतम प्रधानाचार्या होने के लिए प्रदान किया गया।

यह अवार्ड 10 सितम्बर 2014 को लखनऊ के गोमती नगर में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अति माननीय श्री अखिलेश कुमार यादव जी के कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया।

लौटकर सिस्टर ने कहा, बच्चों मैं तो सिर्फ आपका मार्ग तैयार करने लखनऊ गई थी, अगले साल आप वहाँ जिले में अव्वल आने पर मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित होंगे।

इस अवार्ड के लिये सिस्टर पूनम सी.जे. को माननीय डी.आई.ओ. एस. महोदय डॉ. आई.पी.एस. सोलंकी जी ने नामांकित किया था।

समस्त निर्मला परिवार टीचर्स, छात्राएँ एवं अभिभावक गण हृदय से उनके आभारी हैं तथा इस उपलब्धि से महान हर्ष का अनुभव कर रहे हैं।

फ्रेडरिक डेनियल अल्बर्ट
आनन्द सर

कर्म ही पूजा है (रजत जयन्ती)

13.09.2014 को हमारे विद्यालय की दो वरिष्ठ अध्यापिकाओं का रजत जयंती समारोह मनाया गया। श्रीमती अचला शर्मा एवं श्रीमती क्लारा ब्राउन को इस विद्यालय में स्थाई रूप से कार्य करते हुये 25 वर्ष हो गये। इस उपलक्ष्य में विद्यालय में एक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रार्थना, नृत्य एवं गीत प्रस्तुत किये गये। एक सुखद सरप्राइज भी था। दोनों अध्यापिकाओं के जीवन के विगत 25 वर्षों की मधुर स्मृतियों को संजो कर एक कार्यक्रम प्रोजेक्टर पर दिखाया गया। विद्यालय की प्रबन्धिका सि. दीपा ने चाँदी का ताज पहनाकर दोनों अध्यापिकाओं को सम्मानित किया। प्रधानाचार्या सि. पूनम ने दोनों को स्मृति चिन्ह दिये।

रजत जयन्ती समारोह में दोनों टीचर्स के पारिवारिक सदस्य भी आमंत्रित थे। सभी ने कार्यक्रम का आनन्द लिया व एक गीत के माध्यम से समस्त स्टाफ ने उन्हें शुभकामनाएँ दीं।

श्रीमती रेनु रोबर्ट

ऋषभ सरावगी फाउन्डेशन द्वारा खेलकूद प्रतियोगिता

1 सितम्बर से 5 सितम्बर के मध्य ऋषभ सरावगी मेमोरियल फंड द्वारा आयोजित जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में हमारे विद्यालय की छात्राओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया विद्यालय में बॉलीवाल, बास्केटबॉल तथा एथलेटिक्स के प्रतिभागियों ने भाग लिया। परिणाम इस प्रकार रहे-

बॉलीबाल जूनियर में	प्रथम स्थान
बॉलीबाल सीनियर वर्ग	द्वितीय स्थान
चक्रक्षेपण में प्रौमिला पीटर	द्वितीय स्थान
रुकमन	तृतीय स्थान

छात्राओं ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। 09.09.2014 को दीनदयाल सभागार में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह में विद्यालय की पी.टी.आई. रेखा शर्मा मिस को भी सम्मानित करके प्रशस्ति पत्र दिया गया। पदकों की संख्या निम्न प्रकार से है-

स्वर्ण पदक - 12 रजत पदक - 01 कांस्य पदक - 13

श्रीमती रेखा शर्मा, पी.टी.आई.

लड़कियाँ लड़को से बेहतर (वाद विवाद)

11 सितंबर 2014 को आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता दो वर्गों में हुई जूनियर वर्ग कक्षा 6 से 8 तक एवं सीनियर वर्ग कक्षा 9 से कक्षा 12 तक सीनियर वर्ग की छात्राओं का वाद विवाद 2 राउंड में हुआ। सभी छात्राओं ने बड़े साहस एवं ईमानदारी के साथ अपने विचार पक्ष एवं विपक्ष में रखे। लड़कों के पक्ष में बोलते समय छात्राओं ने लड़कों के साथ पूरा न्याय किया।

जूनियर वर्ग में - प्रथम - दिव्यांशी 7 सी द्वितीय - प्रज्ञा 7 तृतीय - सना

सीनियर वर्ग की छात्राओं में जब वाद-विवाद हुआ तब कुछ छात्रायें काफी उत्तेजित होकर अपना पक्ष रख रही थी। विपक्ष की छात्राओं ने कहा कि कुछ गिनी चुनी महिलाओं ने कुछ नाम क्या कमा लिया लड़कियाँ हर बार उन्ही का नाम ले लेकर अपने आगे होने का दावा करने लगी। लड़कियों के पक्ष में भी माहौल गरम था। उन्होंने कहा लड़कियाँ घर संसार को साथ लेकर हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं। इस लिये उनकी उपलब्धि अधिक सराहनीय है।

सीनियर वर्ग में प्रथम - रुकमन 12 ए द्वितीय-प्रतिष्ठा अग्निहोत्री 11 सी तृतीय - आफरीन 12 बी

बच्चों ने वादविवाद का भरपूर आनन्द लिया कार्यक्रम के अन्त में हमारी प्रधानाचार्या सि. पूनम सी.जे. ने सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा करते हुये विजेताओं को शुभकामनायें दी। उन्होंने अपने प्रेरक वचनों से छात्राओं का जोश और भी बढ़ा दिया।

स्व. श्रीधर सखाराम नेवालकर स्मृति वाद विवाद

10.12.2014, लोकमान्य तिलक कन्या इण्टर कॉलेज झाँसी के प्रांगण में वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वाद-विवाद का विषय था- ''कक्षा 1 से कक्षा 8 तक विद्यार्थियों को जनरल प्रमोशन (सामान्य कक्षोन्नति) देना उनके उज्जवल भविष्य के हित में है।''

हमारे विद्यालय से पक्ष में कक्षा 12 बी की छात्रा अनम फातमी एवं विपक्ष में 12 सी की छात्रा कृष्णा कुमारी ने भाग लिया। प्रतियोगिता में 10 विद्यालयों ने उपस्थिति दर्ज कराई। सभी ने पक्ष विपक्ष में जोरदार दलीले प्रस्तुत की। दैनिक जागरण के प्रमुख सम्पादक श्री यशोवर्धन गुप्त जी समारोह के मुख्य अतिथि रहे। जिला विद्यालय निरीक्षक श्री आई.पी.एस. सोलंकी एवं श्रीमती सोलंकी विशिष्ट अतिथि रहे। लोक मान्य तिलक की अध्यापिका श्रीमती गुर्जर ने कार्यक्रम का संचालन किया। प्रतियोगिता में लोकमान्य तिलक की टीम प्रथम रही। द्वितीय स्थान मिला क्राइस्ट दि किंग कॉलेज की टीम को। हमारे विद्यालय की टीम तृतीय स्थान पर रही।

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रान्तीय विशाल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता 2014 में साक्षी रायकवार ने भाग लेकर जनपद में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

श्रीमती अनीता सिंह

सृजन–वार्षिक महोत्सव

14.11.2014 बालदिवस की सुहानी संध्या, दुल्हन की तरह विद्यालय की सजावट। विद्यालय का वार्षिक महोत्सव 'सृजन' होने जा रहा है। भूतपूर्व विशप फ्रेडरिक डिसूजा जी ने आशीर्वचन बोले तथा मुख्य अतिथि अति माननीय स्वामी जी पीटर परापुल्लिल जी ने दीप प्रज्जवलन किया। कार्यक्रम की थीम सृजन पर आधारित कार्यक्रम क्रियेशन प्रारम्भ हुआ, इसके बाद प्रार्थना नृत्य ने सबका मन मोह लिया। बच्चों ने सुरीले Welcome Song से सबका स्वागत किया। कार्यक्रम बांट ले खुशियां ने सबको दिल खोलकर खुश किया और नन्हे मुन्नों ने दिखा दिया कि 'हमें भी डान्स आता है। जापानी पंखे लेकर मंच पर उतरी बालिकाओं ने खूब भरी ख्वाबों की उड़ान। कार्यक्रम 'सृजन मानव का' हमें विचारों में खींच कर ले गया। गीत ' ये कौन चित्रकार है' ने हमें सृष्टिकर्ता की सर्जकता से भाव विह्वल कर दिया। कार्यक्रम 'देश की शान' ने हमारे वीर सैनिकों के बलिदानी जीवन की मार्मिक झांकी प्रस्तुत की। हास्य नाटिका ये कैसा शहर है ने लोगों को हंसी से लोटपोट कर दिया। 'जीवन से न हार' गीत ने जीवन जीने का एक नया मकसद दिया। कव्वाली 'हमसे बढ़कर कौन' में लड़कों और लड़कियों की दिलचस्प नोक झोंक की सबने सराहना की। नृत्य खेल और व्यायाम में जोश से भरी बालिकाओं ने बड़े साहसिक करतब दिखाए। पूर्वी और पाश्चात्य संस्कृति पर आधारित नृत्य पूरब और पश्चिम ने दोनों सभ्यताओं के मेल का सुन्दर प्रदर्शन किया।

माननीय मुख्य अतिथि स्वामी श्री पीटर परापुल्लिल ने अपने आशीर्वचन में कार्यक्रम की सराहना करते हुये कहा कि विद्यालय में छात्राओं का छोटी कक्षाओं से ही सर्वांगीण विकास किया जा रहा है। उन्होंने हमारे परीक्षा परिणामों एवं हमारी प्रधानाचार्या जी की श्रेष्ठतम् उपलब्धि की भी प्रशंसा की। जिला विद्यालय निरीक्षक श्री आई.पी.एस. सोलंकी जी ने कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की तथा उन्होंने शिक्षा के साथ साथ नृत्य, गान, खेलकूद आदि पाठ्येत्तर गतिविधियों के महत्व को दर्शाया।

सभी अतिथियों एवं अभिभावकों ने कार्यक्रम की हृदय से प्रशंसा की उन्हें यह कार्यक्रम अनूठा एवं अद्वितीय लगा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि माननीय जिला विद्यालय निरीक्षक श्री आई.पी.एस. सोलंकी जी ने कहा कि इस संस्था ने शिक्षा के साथ-साथ पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों में भी अपना नाम कमाया है। उन्होंने कहा कि दिनांक 03.12.2014 को मीटिंग में सभी विद्यालय निरीक्षकों से अपने जिले के तीन श्रेष्ठ विद्यालयों के नाम मांगे गये थे। मैने सबसे पहले निर्मला कॉन्वेंट का ही नाम लिया। यह श्रेष्ठता उन्हें किसी के कहने समझाने से नही मिली बल्कि इसे उन्होंने सिद्ध करके दिखाया है। श्री सोलंकी जी ने अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए विशेष आग्रह किया कि वे अपने बच्चों को अधिक से अधिक समय दें। आज की व्यस्त जीवन शैली में बच्चे अभिभावकों से दूर होते जा रहे है।

अभिभावको का योगदान

शिक्षा के क्षेत्र में अभिभावकों का योगदान - आज अभिभावक बहुत जागरूक हैं तथा बच्चों को शिक्षित करने के लिये वे सर्वाधिक योगदान दे रहे हैं। 2 अगस्त को विद्यालय में इसी विषय पर एक लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें पुरस्कृत छात्राओं के विचार संक्षेप में इस प्रकार हैं।

12बी की छात्रा आफरीन खान लिखती हैं- 'मेरे अभिभावक मुझे हताश होने पर प्रोत्साहन देते हैं। मुझे हर खुशी प्रदान करते हैं। वे मेरे मित्र के समान है। मैं उन्हें अपनी हर बात बताती हूँ तथा वे मुझे सही व गलत में भेद करना सिखाते है। वे मेरे सच्चे मार्ग दर्शक है।

11 सी की शिवानी राज ग्रामीण अभिभावकों के व्यवहार से असन्तुष्ट है जो अभी भी लड़कियों को स्कूल भेजना जरूरी नहीं समझते। वे भूल जाते है कि बेटी पढ़ लिखकर उनका नाम रोशन करेगी व अपने पैरों पर, खड़ी होकर उन्हें ही चिन्ताओं से मुक्त करेगी

12बी की हर्षिता सिंह ने अपनी राय व्यक्त करते हुये लिखा कि आज लड़कों द्वारा किये जा रहे अपराधों के पीछे कहीं न कहीं उनके अभिभावक भी उत्तरदायी है। यदि माता पिता लड़कों पर भी कुछ पाबंदिया लगाये या लड़कों से भी उसी तरह तर्क वितर्क करें जैसे लड़कियों से करते हैं तो अवश्य ही इन गुनाहों में कमी आयेगी।

12 ए की हिना का मानना है कि जब माता पिता बच्चे में हिम्मत एवं आत्मविश्वास जगाते हैं तभी वह स्वप्न देखता है व उनको पूरा करने के लिये उड़ान भरता है। माता पिता बच्चे को स्वतन्त्रता दे कि वे स्वप्न देख सकें। अपनी इच्छा बच्चों पर न थोपे।

12 सी की सोनिया वर्मा लिखती है- '' पापा ने आज तक मेरी एक भी शिक्षक अभिभावक मीटिंग नहीं छोड़ी वे हमेशा आते हैं टीचर्स से मिलते हैं, जो भी मेरा अच्छा या बुरा परिणाम होता है उसके बारे में पूछते हैं और समझाते हैं कि अगली बार और अच्छा करना। वे कभी अपने विचार मुझ पर थोपते नहीं हैं, कहते हैं जो तुम बनना चाहती हो बनो।''

11 सी की शिखा रावलानी चिन्ता व्यक्त करते हुये लिखती हैं कि आज भी भारत में ऐसे पिछड़े हुये अभिभावक है जो शिक्षा की उपयोगिता नही समझते। जिस उम्र में बालकों के हाथ में किताबे होनी चाहिये, उनके हाथ मजदूरी में लगे होते हैं। सरकार ने निर्धनों के लिये मुफ्त शिक्षा की योजना भी बनाई फिर भी माता पिता बच्चों को स्कूल नहीं भेजते।

12 बी की आशिया बानो ईश्वर को धन्यवाद देती हैं कि उन्होंने इतने अच्छे अभिभावक दिये। उनका मानना है कि माता पिता को शिक्षा के साथ साथ बच्चों की सेहत व चारित्रिक विकास पर भी ध्यान देना चाहिए।

9 ए की फिजा बानों के अनुसार अभिभावक हमारे जीवन की प्रथम सीढ़ी है जो हमें उस मंजिल तक ले जाते हैं जहां हमारा सपना है।

12 ए की अनुशा भाटिया अभिभावकों को सलाह देती हैं कि वे घर के माहौल को खुशनुमा रखें। बच्चों को शिक्षित करने के लिये घर पर कम्प्यूटर, समाचार पत्र आदि की सुविधाओं का भी प्रबन्ध करें।

12 ए की ही दरक्शा कहती है- किसी के पापा चाहते है कि बच्चा डॉक्टर बने। मम्मी चाहती हैं कि इंजीनियर बने किन्तु बच्चा स्वयं क्या बनना चाहता है उससे कोई नहीं पूँछता। माता पिता बच्चे को हौसला दें कि वह अपना सपना पूरा कर सकें।

10 सी की सोनाली शर्मा ने लिखा है कि अभिभावकों को कमजोर बच्चों के सामने हमेशा उसकी कमियां ही नहीं गिनानी चाहिये और न ही शिक्षकों की आलोचना करनी चाहिए। प्रोत्साहन पाकर बच्चे अपने अन्दर गुणों को विकसित कर लेते हैं।

मैं आशा करती हूँ कि सभी अभिभावक गण इस समिश्रित लेख को पढ़कर अपने बच्चों की अभिलाषाओं, आकांक्षाओं व आशाओं से परिचित होंगे और इन पर खरा उतरकर बच्चों की शिक्षा में हम शिक्षकों के साथ भरपूर योगदान प्रदान करेंगे।

श्रीमती सुनीता श्रीवास्तव, प्रवक्ता

सुहाना सफर

अवसर था कक्षा 12 के शैक्षणिक भ्रमण का। 18 अक्टूबर रात 7.30 बजे हम स्टेशन पहुचे। टीचर्स और हम 113 लोग थे। पिकनिक की मस्ती स्टेशन से ही शुरू हुई। रात 10 बजे हमारी गाड़ी पठानकोट आई ट्रेन में भी मस्ती का माहौल था। 10 बच्चों का समूह और साथ में एक टीचर सबने अपनी अपनी सीट ली और Sharing Party शुरू हो गई। खाने के बाद गाने शुरू हुये। रात में थोड़ा ही सोए कि सुबह 5.30 पर दिल्ली पहुंच गये। वहां से हम मयूर विहार में पहुंचे वहां तैयार होकर नाश्ता किया और घूमने निकले।

सबसे पहले पहुंचे लोटस टेम्पल। अद्भुत वास्तुकला को देखकर सभी आश्चर्यचकित थे। हमने फोटो खींचे वहां से राजघाट गये। वहां गांधी जी के जीवन की जीवन्त झाकियां देखी तत्पश्चात कुतुबमीनार गये। वहां से हम अक्षरधाम मंदिर पहुंचे। यह मंदिर तो पृथ्वी पर चमत्कार के समान है। मूर्तियों में जैसे जान डाल दी गई हो। हमें बहुत अच्छा लग रहा था। लौटने का मन तो न था फिर भी हम वापस स्टेशन पहुंचे। खा पीकर एवं मस्ती करके हम ऐसे सोये कि आंख खुली तो झांसी स्टेशन सामने था। यह सफर बहुत ही खुशनुमा यादें दे गया जिन्हें हम कभी भूल नहीं पायेंगे।

वर्षा वर्मा, 12ए

टीचर्स सेमिनार

16 अगस्त को सभी की प्रिय सि. मंजूषा ने टीचर्स का सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में छात्र छात्राओं एवं अध्यापक अध्यापिकाओं से जुड़े अनेक विषयों पर चर्चा की गई तथा सभी का मस्तिष्क हर समस्या को नये दृष्टिकोण से सोचने पर मजबूर हो गया। सेमिनार में सभी ने बढ़चढ़ कर अपने विचार व्यक्त किए।

सि. मंजूषा ने पेन्सिल रबर के दृष्टान्त से इस बात को समझाया कि जिस प्रकार पेंसिल से लिखने के लिये हाथ की आवश्यकता होती है उसी प्रकार हमें भी मार्गदर्शन व सहयोग की जरूरत होती हैं जिस प्रकार पेंसिल को समय समय पर कटर से तेज करना पड़ता है वैसे ही हमारे अंदर भी सुधारों की जरूरत होती है। पेंसिल की तरह हमारे कर्मों के निशान मिटाने के बाद भी बाकी रह जाते हैं। हमें कोई भी निर्णय सावधानी पूर्वक लेना चाहिए।

गांधी जयन्ती

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आव्हान पर इस वर्ष गांधी जयन्ती स्वच्छता दिवस के रूप में मनाई गई। विद्यालय में सभी छात्राओं ने इस अवसर पर बढ़ चढ़ कर अपनी भागीदारी दर्शाई। छात्राओं ने अपनी कक्षाओं व विद्यालय ग्रांउड की सफाई की तथा इस कार्यक्रम में अपना उत्साह प्रदर्शित किया।

क्रिसमस मेला

सैफी आलम, 11 सी

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे निर्मला परिवार में हम सभी के मनोरंजन के लिये 22 दिसम्बर को क्रिसमस मेले का आयोजन किया गया। जहाँ पर विभिन्न प्रकार की स्टॉल्स जैसे गोलगप्पे, समोसे, इडली, आइस्क्रीम आदि हमारे शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा लगायी गयी। इस ठण्ड में बच्चों ने गर्म-गर्म समोसों के साथ ठण्डी-ठण्डी आईस्क्रीम का खूब मजा लिया। हमारे विद्यालय के हॉल में विद्यार्थियों के मनोरजंन के लिये डांस का आयोजन हुआ जहाँ पर सभी बच्चों ने भिन्न-भिन्न गानों पर खूब मजे के साथ डांस किया। हमारे विद्यालय की प्रधानाचार्या जी ने भी हम सभी विद्यार्थियों के साथ मिलकर मेले का भरपूर मजा लिया।

जो जीता वहीं विजेता (बास्केट बॉल)

मैच जोरों पर था। कक्षा 12 की छात्रा एक के बाद एक बास्केट करती जा रही थीं तथा उनका स्कोर तेजी से बढ़ रहा था कक्षा 11 में सन्नाटा छा रहा था 5 मिनट का ब्रेक हुआ और पासा पल्ट गया। अब बाजी कक्षा 11 के हाथ में थी उनका स्कोर कक्षा 12 से आगे जा पहुंचा फिर भी कक्षा 12 जूझ रही थी जीतने के लिये लेकिन अंत में जीत कक्षा 11 की ही हुई।

यह दृश्य था बास्केट बॉल मैच का जो दिनांक 26.07.2014 को विद्यालय प्ले ग्राउण्ड में आयोजित किया गया था फादर जोसफ एसडीबी जो टेक्नीकल इंस्टीट्यूट के प्राचार्य है, ने हमारा मुख्य आतिथ्य स्वीकार किया। खेल का प्रारम्भ प्रार्थना द्वारा किया गया मैच था कक्षा 11 व कक्षा 12 के बीच प्रधानाचार्या सि. पूनम व मुख्य अतिथि फा. जोसेफ ने दोनों टीमों का परिचय प्राप्त किया व उन्हें शुभकामनायें दी। कक्षा 11 की कप्तान थी रश्मि सिंह व कक्षा 12 की कप्तान थी प्रोमिला पीटर। क्रीड़ा अध्यापिका श्रीमती रेखा शर्मा एवं क्रीड़ा आध्यापक रवि सर के मार्गदर्शन में छात्राओं ने उत्तम प्रदर्शन किया आनन्द सर की रोचक कमेन्ट्री ने खेल में समा बांध दिया।

कक्षा 11 की विजेता टीम को मुख्य अतिथि फा. जोसफ ने शील्ड प्रदान की व सबने टीम को बधाईयां दी।

प्रोमिला पीटर, 12ए

बॉलीबॉल मैच

04.10.2014 को विद्यालय प्रांगण में बॉलीबाल मैच का आयोजन किया गया। इस मैच में जूनियर व सीनियर टीमें थी। जिनमें 7-7 बच्चे थे। सीनियर टीम 7 प्वाइंट से विजयी रही। आनन्द सर ने आंखों देखा हाल बड़े ही मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत किया। अंत में सि. दीपा ने सभी खिलाड़ियों को बधाईयाँ दी।

सुनहरी सुबह

बी.ए. पढ़ रही सोफिया बहुत सुलझे विचारों की लड़की थी। उसके परिवार में माता पिता और छोटा भाई था। सोफिया के कॉलेज में पढ़ने वाला सिद्धार्थ भी सोफिया का बहुत अच्छा दोस्त था। सोफिया की पढ़ाई में मदद करता था। सोफिया के परिवार में सिद्धार्थ का खूब आना जाना था। हर काम में वह उनका सहयोग करता था। सोफिया के माता पिता और भाई सिद्धार्थ को बहुत पसन्द करते थे। उस दिन भी सिद्धार्थ डिनर पर आने वाला था।

अचानक नाना की तबियत खराब होने पर माता पिता को शहर के बाहर जाना पड़ा। भाई की भी क्रिकेट खेलने दूसरे शहर जाना पड़ा। सोफिया डिनर के लिए स्वादिष्ट खाना तैयार कर चुकी थी। उसने सिद्धार्थ को फोन किया कि वह घर पर अकेली है; मम्मी, पापा और भाई बाहर गये है। सिद्धार्थ जल्दी आ जाये। सिद्धार्थ ने कहा ''मैं पापा के ऑफिस में थोड़ा व्यस्त हूँ, अभी आता हूँ।'' इंतजार करते करते एक घंटा हो गया। सोफिया ने फिर फोन किया सिद्धार्थ ने वही जवाब दिया, ''अभी थोड़ी देर में आता हूँ।'' इस तरह इंतजार करते करते पूरी रात बीत गयी। सुबह के छः बज चुके थे। सोफिया डायनिंग टेबिल पर ही बैठी बैठी सो गयी थी।

सिद्धार्थ के आने पर सोफिया की नींद टूटी, उसने नाराज होते हुए कहा- ''मैं कब से इंतजार कर रही हूँ, तुम अब आये हो?'' सिद्धार्थ ने सोफिया को समझाते हुए कहा '' सोफिया ये रात बहुत काली होती है, इस रात के अंधेरे में बहुत कुछ ऐसे काम हो जाते है जो हमें नहीं करने चाहिए। लेकिन इस सुबह को देखो कितनी सुनहरी और प्रेरणादायक है।''

सोफिया ने कहा - ''ओह! सिद्धार्थ तुम कितने अच्छे हो।'' मैं ईश्वर से दुआ करूँगी कि तुम्हारे जैसा दोस्त हर लड़की को मिले।

''यदि सलाह दे, कोई अच्छी
तो उसको सुन, मत दुकराओ।
बनके हंसों के समान
दाख में फंस मत पछताओ।''

श्रीमती सेलीना स्वामी
सहायक अध्यापिका

कविता

आई देखो शरद सुहानी
शीत ऋतु का मौसम आया,
लाखों ये सौगाते लाया।
अब चिड़ियाँ हैं लगी चहकने,
और कलियाँ भी लगी महकने।
बहती ठण्डी पवन सुहानी,
मौसम की भी बदली वाणी।
तरूओं पर हैं खिलते फूल,
बदल गई है प्रकृति समूल।
नदियाँ देखो कल कल गाती,
शीत ऋतु है हमको भाती।
महका है यह आँगन मेरा,
भ्रमरों का अब हुआ बसेरा।
है ऋतुओं की रानी शीत,
आओ गायें इसके गीत।
है सदियो से ये ही रीत,
आओ गायें इसके गीत।

अवनीश वर्मा
सहायक अध्यापक

परख

मित्र वही जो सदा सिखाएँ,
ईमानदारी क्या तुम्हे बताएँ।
सत्य मार्ग पर चलना कैसे,
वह खुद चलकर तुम्हे दिखाएँ।
दुःख की घड़ियों में संग चलकर,
तुमको दुःख सहना सिखलाएँ।
संकट में वह साथ निभाएँ,
दुनियाँ से लड़ना समझाएँ।
अवगुण की पहचान कराएँ,
सत् जीवन का भेद बतायें।
सच्चे मित्र के यही हैं लक्षण,
सोच समझकर मित्र बनाएँ।

कविता यादव
9 ए

आमने सामने सीधा संवाद

दिनांक 19.11.2014 झांसी जिले के जिलाधिकारी श्री अनुराग यादव जी का हमारे विद्यालय में शुभागमन हुआ। उन्होंने हमारी प्रधानाचार्या को 1 बजे का समय दिया था। नियत समय पर आकर उन्होंने अपनी समय बद्धता का परिचय दिया। आते ही उनका सिस्टर पूनम व छात्राओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया। जिलाधिकारी महोदय विशेष कार्य आ जाने के कारण हमारे विद्यालय के वार्षिक महोत्सव में उपस्थित नहीं हो सके थे। अत 19 तारीख को उन्होंने स्वत: ही विद्यालय आकर बच्चों से मिलने के लिये समय दिया था।

सर्वप्रथम उन्हें वार्षिक महोत्सव की कुछ झलकियां दिखाई गई तत्पश्चात् सि. ने उन्हें मंच पर आमंत्रित किया। उन्होंने अत्यन्त सीधी और सरल भाषा में अपने विचार व्यक्त किये तथा छात्राओं से कहा कि वे उनसे जो भी प्रश्न पूछना चाहती हैं पूंछ लें। 12सी की कृष्णा कुमारी ने उनसे प्रश्न किया कि जिस तरह की सोच में आपका बचपन बीता, क्या आज इस पद पर रहते हुये भी आपकी वही सोच है? 11 सी की छात्रा प्रतिष्ठा अग्निहोत्री ने उनसे प्रश्न किया कि इस पद को हासिल करने के बाद अब आगे आपकी क्या योजना है। एक छात्रा ने प्रश्न किया कि आप बचपन में जितने ईमानदार थे उतने ही आज हैं या नहीं। उन्होंने सभी प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर दिया। उन्होंने बच्चों को अपने बचपन एवं विद्यार्थी जीवन की अनेक घटनायें बताते हुये कहा कि वे प्रारम्भ में अत्यन्त साधारण छात्र थे तथा उन्हें जरा भी अंग्रेजी नहीं आती थी। उनकी उच्च शिक्षा भारत के श्रेष्ठतम विश्वविद्यालय जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी में हुई। उन्होंने कहा कि बच्चों को जो भी बात पता न हो उसे वे अपने टीचर्स से बेहिचक पूछें न पूछने से वे अज्ञानी रह जायेंगे।

जिलाधिकारी जी ने बड़े ही सहज ढंग से बच्चों से सम्वाद कायम किया। बच्चे उनसे बाते करके बड़े खुश थे। हमारी प्रधानाचार्या सि. पूनम के सौजन्य से हमें यह सुअवसर प्राप्त हुआ अत: हम उनके बड़े आभारी हैं।

श्रुति सिंह गौर, 11 ए

प्रथम किरण

मुझे बहुत अच्छा लगता है
प्रात: काल का सुहाना समय।
जब चिड़िया चहचहाती हैं,
कोयल मधुर गीत गाती हैं,
हमारे मन को भाती हैं।
मुझे बहुत अच्छा लगता है।
प्रात: जब विद्यालय आती हूँ,
सखियों के संग प्रार्थना करती हूँ।
मेरी प्रधानाचार्या जब मुस्कुराती हैं,
सुबह और सुनहरी हो जाती हैं
मुझे बहुत अच्छा लगता है।
ठंडी हवायें सन सन करती हैं,
फूल खिले कलियाँ मुस्काती
पेड़ खुशी से लहराते हैं,
मुझे बहुत अच्छा लगता है।
हर सुबह नयी आशा लाती है,
मेरी प्यारी लूसी मिस भी,
हंसी खुशी से पाठ पढ़ाती।
मुझे बहुत अच्छा लगता है।
प्रथम किरण प्रात: की आती
नई उम्मीद जीवन में लाती।
नये जोश और नई उमंगे,
सारा दिन है साथ निभाती।
मुझे बहुत अच्छा लगता है।

फिजा बानो
7 सी

नादान बालक

माँ की गोद में खेला शैशव
फिरे गोद में लेकर सबजन
पिता ले साथ में घूमे हरपल
मात पिता ने संघर्ष किया
उसे सब सुख भरपूर दिया
एक अनोखा शिशु था वह
जिसे उन्होंने लाड़ किया।
मात पिता ने स्वप्न सजाकर
फिर भेजा उसको विद्यालय।
वह बालक अब किशोर हो गया,
मात पिता का अति प्रिय था वह।
माँ ने स्वप्न एक यह देखा,
उच्च पद पर आसीन है बेटा।
माँ ने खूब किया संघर्ष,
उसे बनादें एक आदर्श,
अब वह बालक युवा हो गया
भूल गया माँ के संघर्ष।
मात पिता यह देख दु:खी थे।
कि बालक इतना बिगड़ रहा है।
दिन रात प्रयास किया माता ने,
कि शिशु बने महान।
पर न आई याद युवक को
था वह माँ की प्रिय संतान
मात पिता का हृदय टूटता,
पर वह बालक समझ न पाया।
छोटी सी थी यह एक गाथा,
सुनाती जीवन संघर्ष एक माँ का।

शिवांगी साहू
10 सी

माँ

मेरी माँ है प्यारी,
माँ है सबसे न्यारी,
आती हैं तो मैं खुश होती,
मेरी माँ है न्यारी।
माँ की एक कहानी!
मुझे बतायी नानी ने,
माँ लाती और ले जाती,
खेतों में हरियाली छाती।
माँ है सूरज की चमक,
माँ है चाँद तारों की चाँदनी,
माँ है ममता की रानी,
मेरी माँ है प्यारी।
माँ फैलाती अपना प्यार,
बच्चे कहते है ओह माँ,
तुम कितनी न्यारी
मेरी माँ है प्यारी।

निशा मीना
7 बी

कुछ अच्छी छोटी छोटी बातें

1. बहाना और सफलता एक साथ नहीं चलते। अगर आप सफल होना चाहते हैं तो बहाना बनाना छोड़ दीजिए और बहाना बना रहे हैं तो सफलता को भूल जाइये। 'मैं' नहीं कर सकता यह सबसे बुरा बहाना है। दरअसल बहाना आलसी लोगों का खजाना है। बहाने से आप दूसरों को संतुष्ट कर सकते हैं पर खुद को नहीं। अगर आप जीवन में सफल होना चाहते हैं तो इस आदत से तुरन्त तौबा कर लीजिए।
2. चार वाक्य जो आदमी की कमजोरी को उजागर करते हैं। 1. लोग क्या कहेंगे, 2. मुझसे नहीं होगा, 3. अभी मेरा मूड नहीं हैं, 4. मेरा तो भाग्य ही खराब है। आदमी जैसा सोचता है, वैसा ही बनता है। नकारात्मक सोच आदमी को कमजोर बनाती है। आपको पता होना चाहिए कि निराशावादी के लिए दो अंधेरी रातों के बीच में केवल एक उजाला दिन आता है और आशावादी के लिए दो उजले दिनों के बीच केवल एक अंधेरी रात आती हैं
3. आज को सफल बनाओ। कल अपने आप ही सफल हो जाएगा। जन्म को सुधारों मृत्यु अपने आप ही सुधर जाएगी। जीवन का गणित कुछ उल्टा है। जीवन के गणित में वर्तमान को सुधारों तो भविष्य सुधरता है और जीवन को सुधारों तो मृत्यु सुधरती है। संसारी और संत में इतना ही अंतर है कि संत आज को सफल बनाने में व्यस्त है। और संसारी कल को सफल बनाने में मस्त हैं।

सीमा बन्थरिया, सहायक अध्यापिका

एक भाई की सीख

एक आदमी को सिगरेट पीते हुये देखकर एक भले इन्सान ने पूछा, 'भाई तुम सिगरेट क्यों पी रहे हो'
जवाब मिला, 'मेरी आदत, मैं छोड़ नहीं सकता।'
'तुम एक बार इसे भूल जाओ। बुझाकर पानी में फेंक दो।'
'मुझे आदत पड़ चुकी है। मैं अभी फेंक भी दूं तो दोबारा खरीद लाऊँगा।'
मुझे तुम्हारी चिंता है। इसे पीने से से तुम्हारा स्वास्थ्य खराब हो सकता है, तुम मर भी सकते हो। 'अरे मैंने तो कभी इतनी दूर की बात सोची ही नहीं। तुम मुझे क्यों रोक रहे हो? मैं तुम्हारा क्या लगता हूँ'
'तुम मेरे भाई लगते हो। भारत माता समस्त भारतवासियों की माँ है। तभी तो मैं इसे छोड़ने के लिये कह रहा हूँ'
'मैंने तो कभी अपनी सेहत, देश की स्वच्छता' भारतवासियों के हित के विषय में सोचा नहीं। अब मैं इसका प्रायश्चित कैसे करूँ?
बहुत आसान है। जो मैंने तुमसे कहा वही तुम किसी और से कहना मगर प्रेम से। धीरे धीरे यह बात पूरे भारत में फैल जायेगी। हमारा भारत सुन्दर भारत बन जायेगा।
वह आदमी एक नया संकल्प ले कर अपने मार्ग पर आगे बढ़ गया। वह महसूस कर रहा था एक नये रिश्ते की ऊष्मा देश से लगाव व बुराई को छोड़ने का सुख।

शाबिया परवीन, 7बी

हिम्मत न हार

महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव में एक निर्धन, अशिक्षित हरिजन परिवार रहता था। परिवार में बड़ी बेटी को पढ़ना लिखना बहुत पसन्द था। पिता ने बेटी का दाखिला गाँव के ही स्कूल में करा दिया। स्कूल में अध्यापक नीची जाति के बच्चों के साथ भेदभाव करते थे। उच्च जाति के बच्चों की पोशाक अलग थी वे बैठते भी अलग थे। गांव के मुखिया व प्रधान हरिजनों का शोषण करते थे। वह गरीब बेटी जिसका नाम वन्दना था यह सब देखकर दु:खी हो जाती। वह बड़े परिश्रम से पढ़ाई करती। उसकी माँ घरों में झाड़ू बर्तन का काम करती। पिता बेटी की फीस बड़ी मुश्किल से जमा कर पाते थे। कर्जा अधिक हो जाने के कारण साहूकार उसे गुण्डों से पिटवाते थे। पुलिस उसकी एफआईआर भी नहीं लिखती थी। घर में कोई भी त्यौहार खुशियाँ लेकर नहीं आता।
वन्दना बड़े परिश्रम से पढ़ाई कर रही थी। गांव के लोग उसे ताने देते पर वह अनसुनी कर देती। पिता ने कुछ पैसे जोड़े और उसे शहर पढ़ने भेज दिया। अब वह छोटी कक्षाओं के बच्चों को ट्यूशन पढ़ा कर अपना खर्च स्वयं उठाने लगी। लगातार प्रयास करते-करते अन्त में उसने अपनी मञ्जिल पा ही ली। आज वह उसी जिले की जिलाधिकारी है जिसमें वह गांव आता है।
डी एम. बनने के बाद वन्दना सर्वप्रथम अपने गांव के विद्यालय पहुँची। उसने स्कूल के बच्चों की पोशाक समान करवा दी। उसने गांव के विकास के लिये सराहनीय कार्य किये। वन्दना ने दिखा दिया कि लक्ष्य प्राप्ति के लिये साधन की नहीं हौंसले की जरूरत होती है।
'मंजिल खुद ही ढूँढ लेती है, बहादुर मुसाफिरों का पता।'

श्रुति सिंह गौर, 11ए

फर्क पड़ता है

आज रीता स्कूल से घर आई और सबसे पहले जाकर अपने कमरे की सफाई करने लगी। मां ने देखा तो पूछा, 'रीता आज क्या बात है? रोज ऐसा करने का मैं जब कहती थी तो तुम टाल जाती थी।
रीता - 'मां आज हमारे विद्यालय में स्वच्छता का महत्व समझाया गया। हमें न केवल अपने घर में अपितु आस पास भी सफाई रखना चाहिए। इससे बीमारियाँ भी पैदा नहीं होती। मैं आज से सफाई का पूरा ध्यान रखूँगी।'
यहाँ रीता स्वच्छता का संकल्प ले रही थी वहीं गीता पर इस बात का कोई असर नहीं पड़ा। वह रोज की ही तरह स्कूल से आई तथा अपने जूते, कपड़े बैग इधर-उधर फेंक कर अपने कमरे में सोने चली गई। शाम को रीता, गीता के घर खेलने गई। उसने गीता का बिखरा सामान देखकर उसे स्कूल की बात याद दिलाई। गीता बोली 'मैं तो हमेशा ऐसे ही रहती हूँ। मेरे घर के पास भी कचरा रहता है पर मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।' रीता ने गीता को समझाने की बहुत कोशिश की किन्तु उसका प्रयास खाली गया।
रीता ने अपने आसपास रहने वाले लोगों को भी यह बात समझाई और सभी ने अपने आसपास की गन्दगी को साफ किया, घर साफ किये। रीता यह सब देखकर बहुत खुश थी। कुछ दिनों बात गीता ने अचानक विद्यालय आना बन्द कर दिया। उसे भयंकर मलेरिया हुआ था। रीता ने गीता के घर जाकर उसे व उसके माता पिता को समझाया कि यह गन्दगी के कारण हुआ है इस बार उन्होंने रीता की बात ध्यान से सुनी। उन्होंने घर बाहर सफाई करवाई। गीता अब स्वस्थ हो रही थी तथा स्वच्छता का महत्व भी समझ चुकी थी।

अन्जली वर्मा, 8ए

हंसो हंसाओ

1. एक आदमी अपने दोस्त से: चलती बस से कब उतरना चाहिए?
दूसरा दोस्त: जब अस्पताल नजदीक हो।
2. शिक्षक छात्र से संगमरमर किसे कहते हैं?
छात्र: सर जब दो आदमी संग-संग मरते हैं उसे संगमरमर कहते हैं।
3. रोमा: स्नेहा से, क्या तुम गरीबी मिटा सकती हो?
स्नेहा: क्यों नही तुम बोर्ड पर गरीबी लिखो, मैं उसे मिटा कर दिखाती हूँ।
4. बेटा मम्मी से- मम्मी पापा कहां गये हैं?
मम्मी- बेटा तुम्हारे पापा कारखाने गये हैं।
बेटा- अरे मम्मी पापा इतनी बड़ी कार कैसे खा सकते हैं।

रश्मी मिश्रा 6बी

एक पागल- कल मैं ने कुतुबमीनार को धक्का दिया, लेकिन वह हिली तक नही।
दूसरा पागल- हिलती कैसे? मैंने उसे पीछे से पकड़ जो रखा था।
पिता (पुत्र से) - पुत्र इतिहास में फेल क्यों हुए?
पुत्र - पिताजी, मैं क्या करूँ, सभी प्रश्न उस समय के पूछे गये थे जब मैं पैदा भी नही हुआ था।

स्नेहा सिन्हा
5 ए

कविता

सुनो-सुनो क्या
चिड़िया कहती,
हवा सुहानी अब ना बहती,
आँगन की शोभा हरियाली,
पेड़ों से अब आँगन खाली
पीपल, बरगद की छांव नही,
हरा भरा अपना गाँव नही।
चिड़िया ने अब गाना छोड़ा,
घर आँगन में आना छोड़ा।
चिड़ियों को हम चलो मनानें,
धरती पर फिर पेड़ लगाये।

सुरभि द्विवेदी 7बी

जिंदगी और प्रेम

1. प्रेम चाहिए तो समर्पण खर्च करना होगा।
विश्वास चाहिए तो निष्ठा खर्च करनी होगी।
साथ चाहिए तो समय खर्च करना होगा।
किसने कहा रिश्ते मुफ्त मिलते हैं।
एक साँस भी तब आती हैं।
जब एक सांस छोड़ी जाती है।
2. बात बनती है दिल से, दिल बनता है दोस्ती से।
दोस्ती बनती है प्यार से, प्यार बनता है परिवार से।
परिवार बनता है घर से, घर बनता है अपनो से।
3. सच्ची लगन तथा निर्मल उद्देश्य से किया हुआ कार्य कभी निष्फल नही होता।

मुस्कान सिंह कुशवाहा 5 ए

स्कूल में पहला दिन

मम्मी-मम्मी मैं कहता रह गया,
मत भेजो मुझको स्कूल
पापा बोतल टांगे कहते, चलो बेटा अब स्कूल
स्कूल पहुँचकर खुद को मैंने पाया अकेला
न थी मम्मी, न थे पापा, न था कोई खिलौना
हर तरफ कलम और पुस्तक, स्वागत करते मेरा
विद्वानों की भाँति, शुरू कर लो सफर अपना,
मास्टर जी का क्लास में घुसना, हुआ हम सब का उठना,
वे देते हैं काम, लिखना खुद ही नाम,
आज का दौर बड़ा मुश्किल है, पढ़ना ही इसका हल है,
जब छुट्टी हो जाती है आ जाते हैं पापा लेने
फिर शांत हो जाता है मन मेरा,
और चल देता हूँ घर को अपने॥

दीक्षा वर्मा 5ए

कविता

हम बेटी है देश की शान
देश ही हमारी पहचान
हम किसी से कम नही
मरने का कोई गम नही,
हम बेटी है देश की शान
देश ही हमारी पहचान,
पढ़ लिखकर हम बनेंगे महान

ऊँचा करेंगे देश का नाम,
ईश्वर से माँगे हम वरदान
दो हमें विद्या का ज्ञान,
जिससे ऊँचा करें हम देश का नाम
हम बेटी है देश की शान
देश ही हमारी पहचान॥

मुस्कान शाक्या
5ए

वह मेरी शिक्षिका कहलाती

जीवन में जो राह दिखाए
सही तरह से चलना सिखाए।
माता पिता से पहले आती।
जीवन में सदा आदर पाती।
सबकी मान प्रतिष्ठा
जिससे।
सीखी कर्तव्य निष्ठा जिससे।
कभी रही न दूर मैं जिससे।
वह मेरी पथ प्रदर्शक है जो।
मेरे मन को भाती।
वह मेरी शिक्षिका कहलाती।
कभी है शांत, कभी है धीर
स्वभाव में सदा गम्भीर।
मन में दबी रही जो इच्छा।
काश मैं उस जैसी बन पाती।।
जो मेरे मन को भाती।
वह मेरी शिक्षिका कहलाती।।

तजईन अली, 7 ए

मीठी बोली

अपना मुख जब खोलो तुम
मीठी बोली बोलो तुम।
जग में इज्जत पाओगे
बहुत नेक कहलाओगे।
कोयल मीठा गाती है।
सबका जी बहलाती है।
तोता सबको भाता है
राम राम नित गाता है।
मैना क्यों खुश रहती है
मुझे तो क्या कहती है।
कौआ काँ काँ करता है।
किसी का मन नहीं हरता है।
बात हमारी मानो तुम
अपना मुख जब खोलो तुम
मीठी बोली बोलो तुम।

गरिमा शाक्या
5 ए

हमारा स्कूल

निर्मला कान्वेंट हमारा
स्कूल,
हम बच्चे है इसके फूल।
7 बी हमारी कक्षा,
जानता है हर एक बच्चा।
अर्चना मिस पढ़ाती हिन्दी,
लगा के आती हमेशा बिन्दी।
अवनीश सर पढ़ाते इंग्लिश,
कर देते जल्दी कोर्स फिनिश।
सूसी मिस पढ़ाती है विज्ञान,
देती है हमको भरपूर ज्ञान।
डोरथी मिस पढ़ाती कम्प्यूटर,
है हमारी अच्छी दयूटर।

रोशनी 7 बी

जीवन एक कला है

जीवन को जीना
इतना आसान नहीं है।
यह कला सीखना
साधारण काम नहीं है,
सब यहां निर्भर है
मानव की सोच पर
मन को साधना सहज काम नहीं।
मन कठपुतली बन नाचता रहता है सदा
स्व नियन्त्रण से ही दूर हो सकती है सारी व्यथा।
सब प्रभु को समर्पण कर उन्हीं का नाम ले।
संसार सागर को खुशी से पार कर ले।
अपने को संभालेगा तो सब कुछ संभल जायेगा।
दूसरों को संभालने से तेरा चैन खो जायेगा।
जीवन को जीने का यही सार समझ ले।
जीवन निकल जायेगा तू व्यर्थ ही पछतायेगा।
जीवन की अनमोल घड़ियां उमंग से गुजार ले।
जिंदा दिली को प्रतिपल जिंदगी में उतार ले।
धैर्य के धागे में आत्मविश्वास को पिरो ले।
जीवन सफल हो जायेगा जो मन में तू ठान ले।

गजाला कहकशा १२ बी

एन.टी.पी.सी. चित्रकला प्रतियोगिता

ऊर्जा बचाओ अभियान के तहत एनटीपीसी द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में दो वर्ग थे ग्रुप ए में कक्षा 4,5,6 व ग्रुप बी में 7,8,9 शामिल थे।

ग्रुप ए की विजेता

प्रथम- इकरा खान 6 सी

द्वितीय- शिवानी सिंह 6 सी

ग्रुप बी की विजेता

प्रथम- नेहा जाटव 9 बी

द्वितीय- जागृति 9 ए

मुझे भी पढ़ना है

एसैम्बली समाप्त करके, प्रधानाचार्या ने अपने चेम्बर में प्रवेश किया, अपनी कुर्सी पर बैठी ही थी कि लगभग तीन वर्ष की एक छोटी सी लड़की, बाल बिखरे, चप्पल पहने हुए, शायद उसकी माँ ने उसे तैयार तो किया था लेकिन धूल भरी सड़क और बदलते मौसम की मार ने उसे थोड़ा सा अस्त व्यस्त कर दिया था, वह प्रधानाचार्या के सामने खड़ी थी।
क्या है? प्रधानाचार्या का प्रश्न था।
''मुझे भी इस स्कूल में पढ़ना है'' यह उस मासूम लड़की का जवाब था। उसके भोलेपन और आत्मविश्वास को देखकर प्रधानाचार्या टकटकी लगाकर कुछ समय तक उसकी छवि में लगभग खो सी गई थी।
मुझे भी पढ़ना है उस लड़की के दोबारा इस प्रश्न ने उन्हें जगाया। बिना उसके प्रश्न का जवाब दिये प्रधानाचार्या ने उसे एक पेपर पेन्सिल देकर पास ही कुर्सी पर बैठा कर उसे कुछ लिखने को कहा। वह मन ही मन उछल पड़ी, उसके चेहरे पर सफलता की झलक उभर आयी मानों उसने आसमान को छू लिया हो, वो बिना समय गवाएँ, पेपर पर अपनी ही भाषा में तल्लीनता के साथ कुछ लिखती रही, चेम्बर में कौन आया कौन गया उसे कुछ खबर नहीं तभी अलमारी से कैमरा निकालकर प्रधानाचार्या ने उसकी फोटो लेनी चाही तो उसने फोटो के लिये अच्छा पोज भी दिया। अचानक कुछ जानी पहचानी आवाज सुनकर उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो देखा, उसका भाई खड़ा था, उस अनजान लड़की के घर का पता आसपास के लोगों से पूछकर के कर्मचारी ने उसे बुलाया था। वो प्यारी छोटी सी लड़की इस आश्वासन के साथ अपने भाई के साथ चली गई कि उसका एडमीशन अब हो जायेगा। यह थी एक छोटी सी सच्ची घटना जो जाते जाते शायद हमसे कह गई ...
''इन अरमानों को टूटने मत देना, हमारी आंखों को नम होने न देना।
हम वो सृष्टि की अद्भुत रचना है, जिन्हें धरती से कभी कम होने न देना॥''

एडवर्ड अल्बर्ट

गणित

गणित बाल्यकाल में बच्चों की चॉकलेट की गिनती से शुरू होकर आन्तरिक्ष में भेजे जाने वाले उपग्रह की उल्टी गिनती पर खत्म होता है और शायद इससे भी आगे.....
हमारे निर्मला परिवार में भी गणित को एक उच्च स्थान प्राप्त है। वर्तमान में प्रधानाचार्या जी के दिशा निर्देशन में हम भिन्न भिन्न तरीके अपनाकर इसको पुष्ट व मजबूती प्रदान कर रहे है। हमारे विद्यालय में हमारे सहयोगी अध्यापक व अध्यापिकाओं द्वारा संयुक्त प्रयास जारी है जो निम्न प्रकार से हैं।

1. गिनती व पहाड़ों पर विशेष जोर देकर छात्राओं की नीवं को मजबूत करना हमारा सबसे अहम कार्य है।
2. जूनियर कक्षाओं में छात्राओं को हर अध्याय के उपरान्त लिखित व मौखिक रूप से प्रतियोगिता कराकर तैयार किया जा रहा है। प्रत्येक माह सवालों के विभिन्न प्रकारों को संख्या बदल बदल कर शीट के माध्यम से हल कराया जा रहा है। जिससे बच्चे गिने चुने सवालों तक ही सीमित न रह जाएं। साथ ही साथ उनके आत्म विश्वास में भी बढ़ोत्तरी होती जाए।
3. हायर सेक्शन में आकर गणित अपने यौवनावस्था में आ जाती है। कालेज में छात्राओं को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं का ध्यान रखते हुए तैयार कराने का प्रयास किया जा रहा है।
   बच्चों में गणित का ज्ञान विकसित करने के लिए विभिन्न लेखकों की किताबों से शीट के माध्यम से सवालों को कराया जा रहा है। जिससे हमारी छात्राएं हर तरह की गणित सम्बंधी समस्याओं को सुलझा सकें। वर्तमान में प्रधानाचार्या जी द्वारा इस ज्ञान को और अच्छे से दिए जाने हेतु स्क्रीन व प्रोजेक्टर की भी सुविधा प्रदान की गई है। इसका परिणाम यह है कि हमारे विद्यालय की छात्राएँ प्रतिवर्ष बोर्ड की परीक्षा में झाँसी टॉप फाइव में अपना स्थान बना पाती हैं। गणित विषय में 100 में से 99 तक अंक लेकर आयी है जो कि विद्यालय व अभिभावकों के लिए गौरव की बात है।

अपील: समस्त अभिभावकों से अपील है कि आप हमारे इस अभियान में अपना सहयोग प्रदान करें। छात्राओं को घर पर ध्यान देकर उन्हें प्रोत्साहित अवश्य करें। जिससे हम उनके स्वर्ण भविष्य निर्माण में सहयोग प्रदान कर सकें।

छात्रा का नाम	परीक्षा	प्राप्तांक
अलका यादव	इण्टरमीडिएट	99/100
आशी जैन	हाईस्कूल	99/100

राकेश कुमार दुबे
एच.ओ.डी. गणित विभाग

परीक्षा

बात उस समय की है जब स्नातक होना बहुत बड़ी बात थी। सन्जना नाम की लड़की थी। वह एक ऐसे स्नातक महाविद्यालय में पढ़ती थी। जहां अधिकतर नकल का माहौल रहता था। परीक्षा से पहले उसने प्रत्येक विषय की सम्पूर्ण तैयारी कर ली थी और उस समय उसके मित्र मजे उड़ा रहे थे। उसके मित्रों ने सोचा कि परीक्षा के समय नकल मिल जाएगी क्योंकि उस समय नकल होना आम बात थी। धीरे धीरे परीक्षा के दिन नजदीक आ गए। सन्जना अपनी सम्पूर्ण तैयारी के साथ परीक्षा हॉल में बैठने के लिये तैयार थी।

परीक्षा का पहला दिन और पहला प्रश्न पत्र। परीक्षा हाल में सन्जना और उसके मित्र आकर बैठ गए। निरीक्षक आये और उन्होंने उत्तर पुस्तिकाएं वितरित की। सन्जना अपनी तैयारी के साथ सन्तुष्ट थी और परीक्षा लिखने को तैयार थी। प्रश्न पत्र हाथ में आने पर सन्जना ने ईश्वर का स्मरण किया और शांत हो गई। सन्जना को अधिकतर प्रश्न आ गए थे। सन्जना ने कलम उठाकर लिखना प्रारम्भ कर दिया। उसके सभी मित्र व सहेलियां सोच रही थी कि प्रश्न बैंक (मॉडॅल पेपर) कोई खोले और हम सब नकल कर सकें।

धीरे धीरे सभी मित्रों ने प्रश्न पत्र पढ़कर देखा। उनकी तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था। एक परीक्षार्थी ने नकल करने हेतु गाइड खोली धीरे-धीरे सभी परीक्षार्थी अपनी अपनी गाइड खोलने लगे। निरीक्षक ने भी उन्हें गाइड खोलने की अनुमति दे दी थी। सभी गाइड से नकल कर रहे थे मगर सन्जना केवल वही लिख रही थी जो उसे पहले से ही याद था उसके मित्रों ने उससे कहा कि तुम भी देखकर कर लो परन्तु सन्जना सत्य व ईमानदारी के मार्ग पर डटी रही। उसने जरा सी भी नकल नहीं की।

इस प्रकार उसने पूरा प्रश्न पत्र, केवल जो उसने याद किया था, उसी आधार पर हल कर लिया था।

जैसे ही परीक्षा का अन्तिम समय हुआ और पेपर जमा करने के लिये निरीक्षक उठे, वैसे ही पुलिस उस महाविद्यालय के अन्दर पहुंची और पुलिस ने सभी परीक्षार्थियों को गाइड द्वारा नकल करते हुए देख लिया।

पुलिस ने यह भी देखा कि केवल एक लड़की जिसका नाम सन्जना था, उसकी मेज के ऊपर न तो गाइड थी और न ही प्रश्न बैंक। एक लेडीज पुलिस उसके पास गई और बोली-' केवल तुम ही वह लड़की हो, जो नकल नहीं कर रही हो अतः तुम एक ईमानदार व सत्यनिष्ठ लड़की हो।' उस लेडीज पुलिस ने उसकी उत्तर पुस्तिका अलग रख ली।

जो भी विद्यार्थी नकल कर रहे थे, पुलिस ने उन सभी की उत्तर पुस्तिकाएँ जब्त कर ली और उन्हें तीन साल तक कोई भी परीक्षा देने पर रोक लगा दी। महाविद्यालय को लॉक कर दिया गया और निरीक्षक को जेल हो गई।

पुलिस ने सन्जना की कॉपी अलग रख ली थी। उस कॉपी को उन्होंने किसी अन्य महाविद्यालय की जमा हुई कॉपियों के साथ संलग्न कर दिया। अब सन्जना की कॉपियां उस महाविद्यालय की अन्य कॉपियों के समान चैक की जायेंगी।

कॉपियों की जांच हुई। परीक्षा का परिणाम घोषित होने ही वाला था और सन्जना अत्यंत भयभीत थी। परीक्षा का परिणाम आया और सन्जना ने देखा कि उसके ९० प्रतिशत अंक आए है और वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है। सन्जना को अपनी सत्य और ईमानदानी का फल मिल चुका था।

अनुशा भाटिया, 12 ए

समझदारी

श्यामलाल और रामलाल गहरे मित्र थे। श्यामलाल का काम अच्छा नहीं चल रहा था। उसने दूसरे नगर जाकर भाग्य आजमाने की योजना बनाई। उसने अपनी सारी सम्पत्ति बेच दी। एक तराजू बचा रहा। उसे व्यापार की वस्तु समझकर नहीं बेचा। श्यामलाल ने तराजू रामलाल के पास रखवा दिया और कहा, जब लौटूंगा तो ले लूँगा।

दूसरे नगर में श्यामलाल का काम चल पड़ा। उसने खूब धन कमाया। वह रामलाल के घर तराजू वापस लेने पहुंचा। रामलाल के मन में छल आ गया और वह बोला कि तराजू मैंने तहखाने में सुरक्षित रख दिया था किन्तु उसे चूहे खा गये। श्यामलाल बोला, कोई बात नहीं मित्र। अपने बेटे को मेरे साथ भेज दो। पहले मैं नदी में स्नान करूंगा, फिर घर जाऊँगा। वह मेरे कपड़ों की रखवाली करेगा। रामलाल ने अपने बेटे को भेज दिया।

थोड़ी देर बाद श्यामलाल चिल्लाता हुआ आया। रामलाल के पूछने पर श्यामलाल ने बताया कि जब मैं नदी में स्नान कर रहा था तो तुम्हारे बेटे को बाज उठा ले गया। रामलाल ने कहा कि ऐसा हो ही नहीं सकता।

दोनों लड़ते हुये न्यायालय पहुंचे। रामलाल ने न्यायाधीश को बताया कि श्यामलाल कहता है कि मेरे बेटे को बाज ले गया। तब न्यायाधीश ने कहा कि यह तो सफेद झूठ है। तब श्यामलाल बोला, 'ठीक वैसे ही जैसे चूहे तराजू को खा सकते है।' न्यायाधीश के पूछने पर श्यामलाल ने उन्हें पूरी बात बताई। उन्हें सारी बात समझ में आ गई तथा आदेश दिया कि तराजू और रामलाल के बेटे को न्यायालय में लाकर एक दूसरे को सौंप दें। श्यामलाल को अपनी सूझबूझ से अपनी वस्तु वापस मिल गई। रामलाल ने क्षमा मांगी तथा वे दोनों फिर से अच्छे मित्र बन गये।

असना अंसारी, 6 ए

रंगोली प्रतियोगिता

स्वच्छता दिवस के अवसर पर झांसी रेलवे स्टेशन पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निर्मला कॉन्वेंट की भी चार छात्रायें इस प्रतियोगिता में भाग लेने सीमा वैश्य मिस व सुनीता श्रीवास्तव मिस के साथ स्टेशन पहुंची व गांधी जी के चित्र से सुसज्जित सुन्दर रंगोली चित्रित की।

उसका विश्वास अडिग था

यह कहानी है माला की, एक छोटे से गांव की भोली भाली लड़की जिसके पिता राजपुर नामक गांव के छोटे से किसान हैं। माला के पिता रामदास ने बचपन से ही उसे नैतिक मूल्यों से अवगत कराया था जिसमें सबसे पहले थे सत्य एवं ईमानदारी।

एक बार माला के पिता को खेत में एक हीरों का हार मिला जिसके कुछ हीरे निकले हुए थे। माला के पिता ने ईमानदारी दिखाते हुए वह हार राजा के समक्ष रखकर पूरी घटना बताई। माला के पिता ने इसके लिए किसी ईनाम की इच्छा भी जाहिर नहीं की परंतु राजा ने सोचा कि कुछ हीरे निकालकर रामदास ने यह हार ईनाम के लालच में राजा के समक्ष रखा है इसलिए राजा ने उन्हें बंदी बना लिया। इस विषय में माला के बहुत अनुरोध करने पर भी राजा ने उसकी एक न सुनी। इतने पर भी माला का सत्य व ईमानदारी से विश्वास न उठा। वह खेत पर गई और कठिन परिश्रम से खेत की जुताई करने पर एक हीरे व सोने से भरा हुआ सोने का घड़ा मिला। यदि माला चाहती तो कुछ हीरे राजा को देकर अपने पिता को स्वतंत्र करा सकती थी और अपना पूरा जीवन आराम से काट सकती थी परंतु उसने ऐसा नहीं किया और राजा को वह सब कुछ दे दिया। इस पर राजा को विश्वास हुआ कि माला के जीवन के आधार ही सत्य एवं ईमानदारी है। राजा ने माला से प्रसन्न होकर न केवल उसके पिता को स्वतंत्र किया अपितु उसका विवाह अपने पुत्र से कराकर अपने राज्य को भविष्य की एक सत्यवादी व ईमानदार रानी दी।

'कुछ लोग कहते हैं कि सत्य एवं ईमानदारी से हम कुछ प्राप्त नहीं कर सकते परंतु यदि हम अपने जीवन में इन्हें ग्रहण कर लें तो कलयुग में भी इनसे बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है।'

अनम फातमी, 12 बी

पछतावा

एक बहुत शैतान लड़का था उसके घर में भी सब उसकी शैतानी से बहुत परेशान रहते थे। वह रोज खेलने जाता था और कोई न कोई शैतानी कर के आता था एक बार वह खेलकर आ रहा था तो उसने रास्ते में एक जख्मी कुत्ते को देखा तो उसे एक शैतानी सूझी। उसने सड़क पर पड़े पत्थर को उठाया और उस जख्मी कुत्ते को मार कर भाग आया। वह उस जख्मी कुत्ते के साथ रोज ऐसा ही करता था। एक दिन जब वह उस जख्मी कुत्ते को पत्थर मारकर घर आ रहा था तो उसने देखा कि एक छोटा बच्चा सड़क पर पड़ी जख्मी गाय को सहला रहा था और उसके जख्म पोंछ रहा था तभी उसे अपनी करतूत याद आयी और वह भागकर उस जख्मी कुत्ते के पास गया और उसने देखा कि कुत्ता मर चुका था उसे बड़ा दुख हुआ वह दुखी मन के साथ घर लौटा और घर पर आने के बाद उसने यह बात अपने पापा को बतायी तो उसके पापा ने भी उसे डांटा। उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था और उसने शैतानी छोड़ दी। अब वह शैतान से सच्चा और ईमानदार बन गया था। उसने बड़ी लगन से पढ़ाई की और मन में ठान लिया कि उसे बड़े होकर जानवरों की सेवा करनी है। अब वह कक्षा में अव्वल आने लगा था। कहां नीचे से अव्वल आने वाला लड़का अब पूरी कक्षा में अव्वल आने लगा था।

जैसा उसने सोचा था बिल्कुल वैसा ही हुआ अब वह जानवरों का डॉक्टर बन चुका था। उसने जानवरों के लिए एक अस्पताल भी खोला और सच्चे मन से जानवरों की सेवा करने लगा।

वह उस घटना को कभी नहीं भुला सकता जिसने उसकी पूरी जिन्दगी बदल दी।

सिमरन कौर, 12 सी

चुनौती

कदम बढ़ा, कदम बढ़ा,
ये जीवन एक संघर्ष है।
कांटो भरी डगर है,
बहुत लम्बा सफर है।
दूर तक जाना है,
बहुत कुछ कर दिखाना है।
हौसलों से भरी उड़ान है,
छूने को सारा आसमान है।
कदम बढ़ा, कदम बढ़ा,
ये जीवन एक संग्राम है।
चाहे जितनी हो बंदिश,
चाहे जितना हो अंधेरा,
मेरी जिद इस बात की,
मुझे सुबह की तलाश है।
रूक जाऊँ तो घनी रात है।
आगे चुनौतियों की सौगात है।
कदम बढ़ा, कदम बढ़ा,
ये जीवन एक ललकार है।

लक्ष्मी देवी, 11 बी

एल.के.जी.

Education is one of the noblest vocations one can think of. It enriches the giver and the receiver alike. Jesus says, "Those who teach and lead others from darkness to light, from ignorance to knowledge especially the knowledge of right from wrong will shine like the stars in the heavens lighting up the lives of many around them.

We as educators constantly ask ourselves, "What more can I do for our society and for God? Propelled by this driving force and recognizing the needs of the times and taking into consideration the desire of several people, we finally started our Mary Ward Pre-School in 2012. Our charismatic Foundress Mother Mary Ward, looking far ahead of her time, in 1609 recognized the urgent need for the education of the girl child. Hence she embarked upon a revolutionary movement- namely, the Empowerment of Women and the education of girls as early as the 16th century. She is fondly remembered as the pioneer of the movement "Women's Empowerment" which is a much talked about topic in the media world. Mother Mary Ward started with girls' education as a first step to achieving her goal.

Following her charism, the congregation of Jesus (CJ Sisters) carry on this challenging mission of educating our girls to become strong women having confidence in themselves and are able to discern and make right choices in life.

In our Pre- Primary School (LKG) we try to give the 'Little Ones' a good foundation in the 3 R's in a friendly atmosphere of play and work. The children are taught reading, writing, arithmetic, communicative skills, creative art etc. They are given basic training in cleanliness, self –help, responsibility and group interaction. Respect for God's Creation and for one another, appreciating the surroundings, adjustment to the environment, practicing good manners etc. are instilled in the children through various outdoor and indoor activities. Thanks to the co-operation of parents and the hard work and dedication of the teachers, all is well and we hope that our effort will take these young hearts to greater heights of knowledge of wisdom.

Sr. Patricia CJ

ओ मेरे माँझी

''ओ मेरे माँझी, ले चल पार'' यह थीम थी 12 वीं क्लास के विदाई समारोह की। छोटी बड़ी नावों एवं नीले सफेद की रंग योजना से सुसज्जित हॉल में प्रस्तुत किये गये सुन्दर कार्यक्रम ने सबका मन मोह लिया। बच्चों ने खुलकर कार्यक्रम का आनन्द लिया साक्षी और शिखा ने दीदियों को मनोरंजक खेल खिलाये। अन्त में कक्षा 12 व 11 की छात्राओं ने स्टेज पर नृत्य करके खूब आनन्द लिया। कॉलेज का ये आखिरी दिन बच्चों के लिये यादगार बन गया।

सुनीता श्रीवास्तव

स्टाफ पिकनिक

हमारा स्कूल

निर्मला कान्वेंट है हमारा स्कूल,
हम सब बच्चे है इसके फूल।
अनुशासन है इसका मूल।
प्रिंसिपल है इसकी शान,
हर टीचर है ज्ञान की खान।
देख के सर, मैडम की मुस्कान
हम सब में आ जाती जान।
स्कूल का नाम रोशन करेंगे,
नई दिशा की ओर बढ़ेंगे।
निर्मला कॉन्वेंट है हमारा स्कूल,
हम सब बच्चे इसके फूल।

अच्छी आदत

अगर नही हैं दांत सड़ाना
कभी नही तुम चॉकलेट खाना।
हाथ धोकर खाना खाओ,
बीमारी को दूर भगाओ।
रोटी सब्जी हंसकर खाना,
बाजारू चीजों से सेहत न गिराना।
अगर नही हो चश्मा पहनना,
खाओ खूब हरी सब्जियाँ।
अगर चाहते हो दुर्घटना से बचना,
सड़क पर हमेशा बाएँ चलना।

रश्मी मिश्रा, 6बी

इरम
3 ए

पलक यादव
5 ए

निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इण्टर कालेज झाँसी